

मध्य प्रदेश एवं मालवा पठार प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में नगरीकरण की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

विनय कृष्ण पाण्डेय

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.330>

शोध संक्षेप—

मध्य प्रदेश एवं म0प्र0 के ही 14 जिलों को मिलाकर बने मालवा पठार प्रदेश में नगरीकरण की प्रवृत्ति का सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में एवं जिलों के मध्य आपस में आंकड़ों एवं अवलोकन के माध्यम से तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है तथा यह स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है कि किस प्रकार मालवा पठार प्रदेश सम्पूर्ण मध्य प्रदेश से अलग विकसित हो रहा है तथा भौगोलिक विविधता लिये हुए यह क्षेत्र पठारी होते हुए अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुआ है। शोध पत्र में 1981, 1991, 2001 एवं 2011 के आंकड़ों का प्रयोग जनगणना विभाग से प्राप्त कर किया गया है तथा इस आंकड़ों को शोध के उद्देश्य के अनुसार परिमार्जित करने का प्रयास करके शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास किया गया है। अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण शोध को तीन उद्देश्यों के अनुसार तीन भाग में बाँटकर अध्ययन किया गया है एवं शोध में वर्णित शोध परिकल्पनाओं को सिद्ध करने का प्रयास किया गया एवं अन्त में शोध निष्कर्ष एवं सुझाव को सम्मिलित करके शोध के महत्व एवं उसकी उपयोगिता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। इस शोध को पूर्ण करने में सन्दर्भित शोध पत्रों एवं पुस्तकों, शोध प्रबन्धों का गहन अध्ययन किया गया एवं उनका विवरण अन्त में दिया गया है।

मुख्य शब्द— कार्यात्मक संरचना, नगरीयता, आधारभूत सुविधा, नगरीकरण की प्रवृत्ति, आंकड़े एवं विधि तंत्र, ऋणात्मक वृद्धि, विकासात्मक भौगोलिक विकास, विशेष विश्लेषण, अन्तरावलोकन, बिलग प्रदेश, यूनीफाइड एरिया, प्राकृतिक वृद्धि आव्रजन एवं प्रवजन।

प्रस्तावना—

मध्य प्रदेश के मालवा पठार प्रदेश में नगरीकरण का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है। भारत के मध्य में स्थित मध्य प्रदेश का मालवा पठार सदैव अपनी विशेष विशेषता रखता रहा है। जिसके कारण इस पठार का विभिन्न आयामों से अध्ययन किया जाता रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मालवा पठार में नगरीकरण की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया जायेगा। वर्तमान समय में नगरीकृत क्षेत्र की ओर ग्रामीण जनसंख्या आकर्षित होती है। परिणाम स्वरूप नगरीकरण के स्तर में वृद्धि होती है।

किसी प्रदेश की सम्पूर्ण जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात को या इस अनुपात की वृद्धि की प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं। अर्थात् नगरीकरण, नगरीय जनसंख्या की अधिक आनुपातिक वृद्धि है। जिसके कारण उस विशेष क्षेत्र में नगरीकरण में वृद्धि होती है उसे वहाँ की नगरीकरण की प्रवृत्ति कहते हैं। प्रस्तुत शोध में मालवा पठार के मध्य प्रदेश के अन्तर्गत आने वाले 14 जिलों में नगरीकरण की प्रवृत्ति का विश्लेषण किया जायेगा।

- पूर्व शोधार्थी (भूगोल) समाज विज्ञान संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल (म0प्र0)

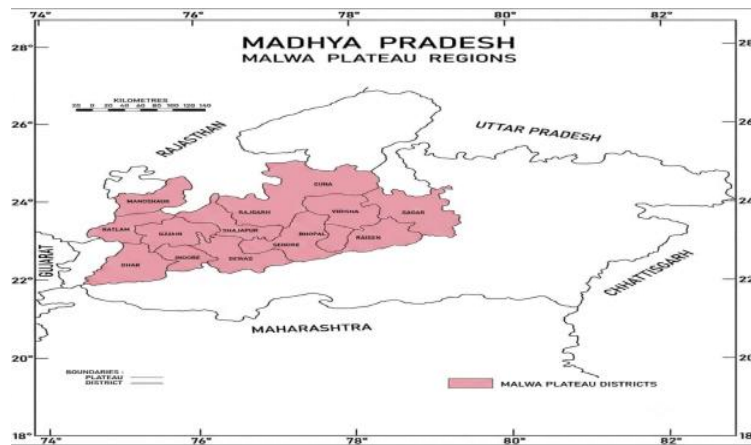
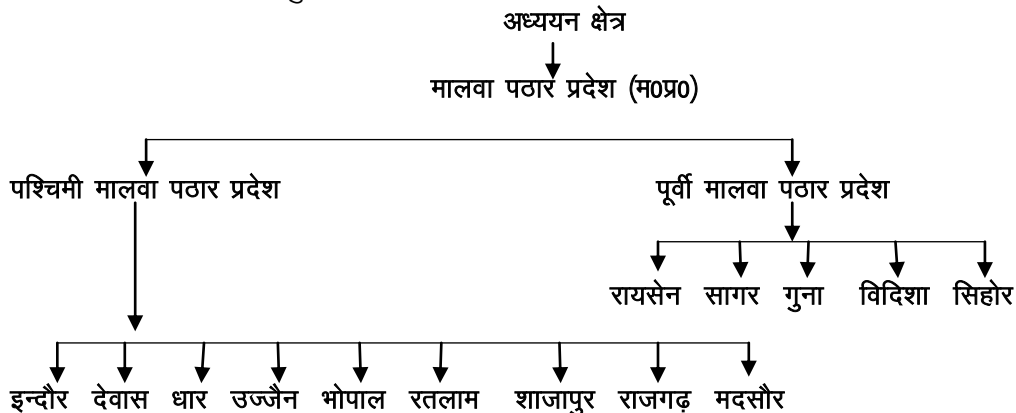
मध्य प्रदेश को विकास की दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि यहाँ मालवा पठार का क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा ज्यादा विकसित है। सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के मालवा पठार को पश्चिमी एवं पूर्वी पठार में विभाजित करके अध्ययन करने पर पता चलता है कि पश्चिमी मालवा मुख्यतः विकसित और औद्योगिक क्षेत्र है जिसमें प्रमुखतः कृषि आधारित उद्योगों की है। जबकि पूर्वी मालवा क्षेत्र मुख्यतः कृषि प्रधान है।

मध्य प्रदेश के कुल 55 जिलों में 14 जिलों को इस पठार प्रदेश में सम्मिलित करके अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र—

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र मध्य प्रदेश एवं मध्य प्रदेश का मालवा पठार प्रदेश है। मालवा पठार प्रदेश का विस्तार वैसे तो अन्य क्षेत्रों तक है परन्तु इस शोध में मात्र मुख्य मालवा के 14 जिलों को सम्मिलित किया गया है। मालवा पठार प्रदेश को कार्यात्मक संरचना के आधार पर दो भागों में बाँटा जा सकता है।

पूर्वी मालवा पठार प्रदेश तथा पश्चिमी मालवा पठार प्रदेश उपरोक्त वर्गीकरण में पूर्वी मालवा के अन्तर्गत रायसेन, सिहोर, विदिशा, सागर एवं गुना आदि कुल 5 जिले हैं जो मुख्यतः कृषि प्रधान हैं। जबकि पश्चिमी मालवा पठार क्षेत्र में इन्दौर देवास, थार, उज्जैन, भोपाल, रतलाम, शाजापुर, राजगढ़ एवं मन्दसौर जिले हैं जो मुख्यतः औद्योगिक क्षेत्र हैं।



पश्चिमी मालवा प्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों की प्रधानता है लेकिन यहाँ हर प्रकार के उद्योगों का व्यापक प्रसार हुआ है। यह क्षेत्र उद्योगों के लिए अनुकूल हैं तथा आधारभूत सुविधाओं के विकास के साथ ही साथ यहाँ उद्योगों का नगरों के पास एकत्रीकरण हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य—

मालवा पठार प्रदेश में नगरीकरण की प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं एवं प्रयास रहेगा कि शोध अपने उद्देश्य को पूर्ण रूपेण प्राप्त करें।

1. ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश की नगरीय जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन एवं नगरीकरण की प्रवृत्ति का विश्लेषण।
3. उस सामाजिक प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करना जिसके माध्यम से नगरीयता प्रेरित होती है।

आंकड़े एवं विधि—तंत्र—

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है एवं पूर्व में किये गये सम्बन्धित विषय के शोध साहित्य का अवलोकन करके शोध में नवीनता लाने का प्रयास किया गया है, साथ ही कोशिश की गयी है कि शोध अध्ययन एवं उससे निकला निष्कर्ष समाज के लिए उपयोगी एवं हितकारी हो। आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है साथ ही आवश्यकता अनुसार रेखा चित्रों एवं मानचित्रों का प्रयोग करके शोध को प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है।

शोध की परिकल्पना—

प्रस्तुत शोध में शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

1. ग्रामीण की अपेक्षा नगरीय जनसंख्या की वृद्धि तीव्र है।
2. नगर तथा नगरों के आसपास जैसे-जैसे रोजगार एवं सुख सुविधाओं का विकास होता है वैसे-वैसे ग्रामीण जनसंख्या वहाँ तेजी से पलायन करके पहुँचती है परिणाम स्वरूप नगर केन्द्रों का तेजी से फैलाव होता है।
3. रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा सुविधा, सुरक्षा आदि नगरीयता को तेजी से प्रेरित करते हैं।

प्रस्तुत शोध के मुख्य तीन उद्देश्य हैं अतः एक-एक उद्देश्य को पूरा करने के लिए समस्त शोध को तीन भागों में विभाजित करके अध्ययन किया गया है।

भाग एक : ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन—

नगरीय जनसंख्या को भारत में विकास का मानक माना जाता है प्रायः ग्रामीण जनसंख्या रोजगार चिकित्सा शिक्षा एवं बेहतर जीवन यापन की लालसा में ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करके नगरीय

क्षेत्रों के तरफ आया करती है। जिला जनगणना पुस्तिका 1971, 1981, 2001 एवं 2011 के अवलोकन के आधार पर दशकीय ग्रामीण नगरीय जनसंख्या वृद्धि को देखें तो सारणी-01 से स्पष्ट होता है कि मालवा प्रदेश के लगभग सभी जिलों में 1971-81 के दशकीय वृद्धि को आधार माना जाय तो पता चलता है कि 1981-1991 एवं 1991-2001 तथा 2001-2011 के मध्य नगरीय जनसंख्या में निरन्तर गिरावट दर्ज की जा रही है जबकि ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। अपवाद स्वरूप 1971-81 के दशक की तुलना 1981-1991 से करें तो पता चलता है कि देवास, गुना, सिहोर एवं विदिशा में नगरीय जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हुई है जो नये औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के कारण उभरे औद्योगिक केन्द्रों की तरफ ग्रामीण जनसंख्या के पलायन के परिणाम स्वरूप हुआ है। मालवा प्रदेश के बड़े नगरों जैसे भोपाल, इन्दौर, रतलाम, सागर आदि में औद्योगिक विकास में स्थिरता आयी है। यह क्षेत्र अब और अधिक जनसंख्या को आकर्षित नहीं कर रहे हैं बल्कि नये क्षेत्र जनसंख्या को ज्यादा आकर्षित कर रहे हैं। 1981-91 के दशक की तुलना 1991-2001 से करें तो नगरीय जनसंख्या केवल धार जिले में बढ़ी है वहीं 1991-2001 से 2001-2011 के दशक में नगरीय जनसंख्या वृद्धि को देखें तो पता चलता है कि इन्दौर एवं मन्दसौर जिलों में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि दिख रही है।

ग्रामीण जनसंख्या पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि 1971-81 की तुलना में 1981-91 में भोपाल, धार, रतलाम, सागर एवं विदिशा में ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि दिख रही है, शेष जिलों में ग्रामीण जनसंख्या में भी उपरोक्त दशक में गिरावट दर्ज की जा रही है जो स्वास्थ्य सुविधाओं एवं जागरूकता का ग्रामीण क्षेत्रों में फैलाव एवं कुछ नगरों की तरफ पलायन का भी परिणाम है। 1981-91 के दशक की तुलना में 1991-2001 के दशक को देखें तो पता चलता है कि भोपाल, देवास, गुना, इन्दौर, मन्दसौर, रायसेन, राजगढ़ रतलाम, सिहोर, शाजापुर, उज्जैन तथा विदिशा में ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि दिख रही है। जबकि सम्पूर्ण म0प्र0 में 1981-91 में ग्रामीण जनसंख्या की दशकीय वृद्धि 22.44 थी जो 1991-2001 में घटकर 22.28 रही है।

Table-01

District wise Urban- Rural Comparative Decadal Growth Rate in Malwa Region

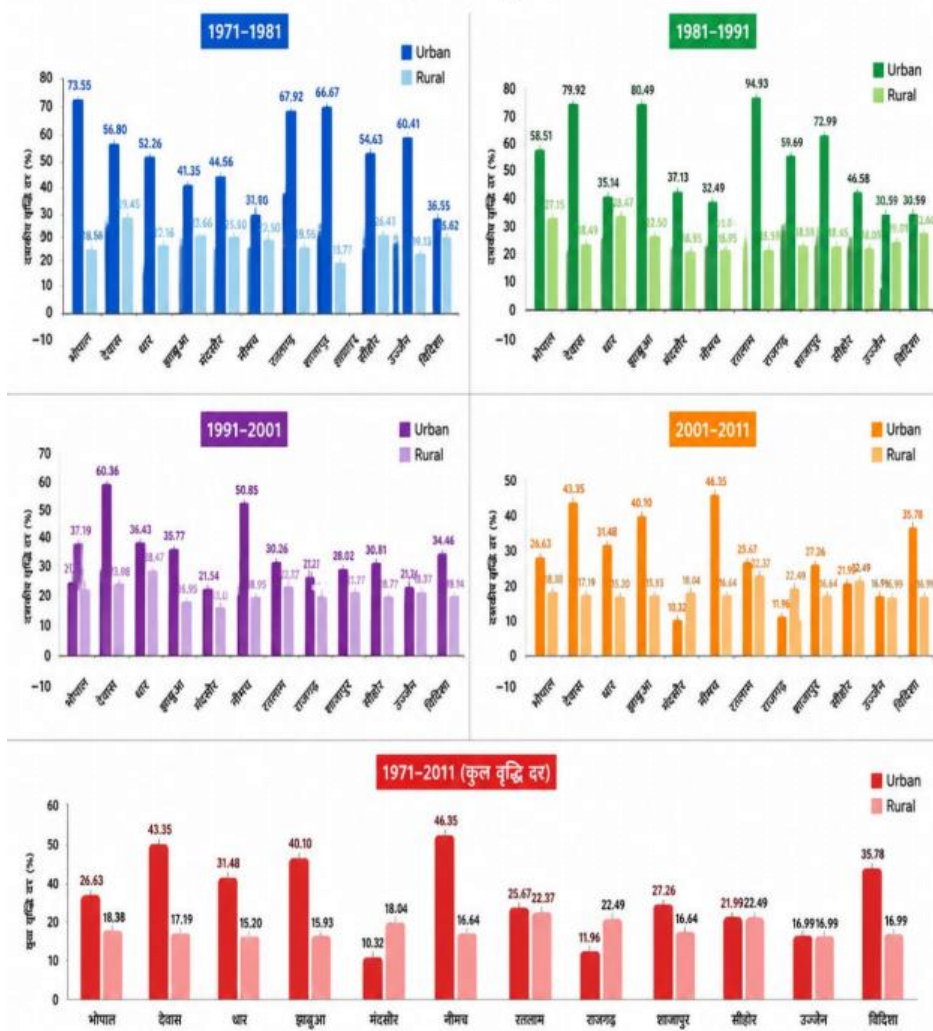
District	1971-1981		1981-1991		1991-2001		2001-2011	
	Urban	Rural	Urban	Rural	Urban	Rural	Urban	Rural
Bhopal	73.65	18.58	58.51	27.15	37.19	33.29	29.11	25.78
Dewas	56.80	29.45	79.92	18.49	33.88	23.98	26.07	16.99
Dhar	52.26	22.16	35.14	28.47	60.36	22.26	43.35	21.99
Guna	41.35	25.86	80.49	22.58	38.43	24.38	31.48	23.43
Indore	44.56	25.58	37.13	16.95	35.77	31.01	40.10	15.30
Mandsuore	31.78	30.41	32.49	21.34	15.01	25.89	25.67	10.32
Raisen	129.91	22.50	94.83	15.45	50.05	24.33	46.75	11.96
Rajgarh	69.82	19.55	59.09	18.58	30.26	25.53	27.26	22.49

Ratlam	132.70	21.76	28.79	22.12	18.95	27.91	18.04	20.37
Sagar	41.63	19.01	30.59	22.19	22.75	22.69	19.97	16.64
Sehore	54.65	25.43	72.99	21.07	28.02	28.28	28.19	20.04
Shahjhpur	60.41	19.13	46.58	18.85	30.81	23.65	22.62	15.93
Ujjain	36.55	25.62	30.58	19.77	21.24	25.32	17.54	15.20
Vidisha	43.09	14.96	46.78	19.24	34.46	23.11	30.44	17.19
M.P.	-	-	43.92	22.44	30.03	22.28	25.63	18.58

Source - District Census Hand Book 1971,1981,1991,2001,2011

मालवा क्षेत्र में शहरी एवं ग्रामीण दशकीय वृद्धि दर (%)

(जिला-वार तुलना)



नोट: दशकीय वृद्धि दर (%) = (वर्तमान जनसंख्या - पूर्व जनसंख्या) / पूर्व जनसंख्या × 100

वहीं 1991–2001 की तुलना में 2001–2011 के दशक को देखें तो पता चलता है कि मालवा पठार प्रदेश के सभी जिलों में ग्रामीण जनसंख्या के दशकीय वृद्धि में गिरावट दिख रही है। जो जागरूकता शिक्षा के प्रसार एवं ग्रामीण क्षेत्रों में भी विकास के पहुँचने का संकेत है। इसी दशक में सम्पूर्ण म0प्र0 को देखें तो 1991–2001 में ग्रामीण जनसंख्या की दशकीय वृद्धि 22.28 थी जो 2001–2011 के दशक में घट कर 18.38 रह गयी है।

उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता है कि ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा नगरीय जनसंख्या में वृद्धि ज्यादा है यद्यपि सभी दशकों में ग्रामीण जनसंख्या एवं नगरीय जनसंख्या दोनों में गिरावट दिख रही है।

भाग दो : म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश की नगरीय जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन एवं नगरीकरण की प्रवृत्ति का विश्लेषण

मध्य प्रदेश का मालवा पठार क्षेत्र खनिजों में व्यापक सम्पन्न क्षेत्र है। पूरा क्षेत्र पठारी है परन्तु बीच-बीच में खेती योग्य भूमियाँ भी हैं यह क्षेत्र मोटे अनाजों एवं सोयाबीन उत्पादन का मुख्य क्षेत्र है जिससे इस क्षेत्र में खनिज आधारित एवं कृषि उत्पादन आधारित उद्योगों का व्यापक विकास हुआ है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह क्षेत्र म0प्र0 का सबसे विकसित क्षेत्र है इसमें उद्योगों का नगरीय क्षेत्रों में केन्द्रण हुआ है। इस क्षेत्र में आधार-भूत सुविधाओं के विकास के कारण उद्योग आकर्षित हुए हैं। परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र के नगरों में न कि म0प्र0 अपित अन्य प्रदेशों से भी जनसंख्या आकर्षित हुई है। जिसका यहाँ के जनांकिकी पर प्रभाव पड़ा है।

Table-02

Urban Population Growth in Madhya Pradesh & Malwa Plateau Region

Census year	Urban Population in Madhya Pradesh	Decadal Growth Rate	Urban Population in Malwa Region	Decadal Growth Rate
1981	8528287	1971 to 1981 52.92	3728047	1971 to 1981 49.48
1991	12274144	1981 to 1991 43.92	5421928	1981 to 1991 45.44
2001	15967145	1991-2001 30.08	7174716	1991 to 2001 32.32
2011	20059666	2001 to 2011 25.63	9331785	2001 to 2011 30.06

Source : Calculated Census of India P.C.A. 1971,1981,1991,2001,2011 & DCHB (M.P.)

नोट— म0प्र0 की 1981 एवं 1991 की नगरीय जनसंख्या एवं दशकीय वृद्धि वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य की नगरीय जनसंख्या को घटाकर निकाला गया है।

तालिका 02 को देखे तो म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश के 14 जिलों के नगरीय जनसंख्या के आकड़ों को संयुक्त करके तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। मध्य प्रदेश में वर्ष 1981 में दशकीय वृद्धि 52.99 थी तो उसी दशक में मालवा पठार प्रदेश की नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 49.48 थी जो सम्पूर्ण प्रदेश के औसत से कम थी। जबकि 1981 से 1991 के दशक में म0प्र0 के नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि 43.92 थी वहीं मालवा की 45.44 रही जो प्रदेश के औसत से अधिक हो गयी जो स्पष्ट कर रही है कि 1991 के दशक में मालवा पठार प्रदेश में नगरीकरण की प्रवृत्ति तीव्र रही है। जो तीव्र औद्योगीकरण, कृषि पर आधारित उद्योगों के विकास एवं ढांचागत सुधार की तरफ इशारा करता है।

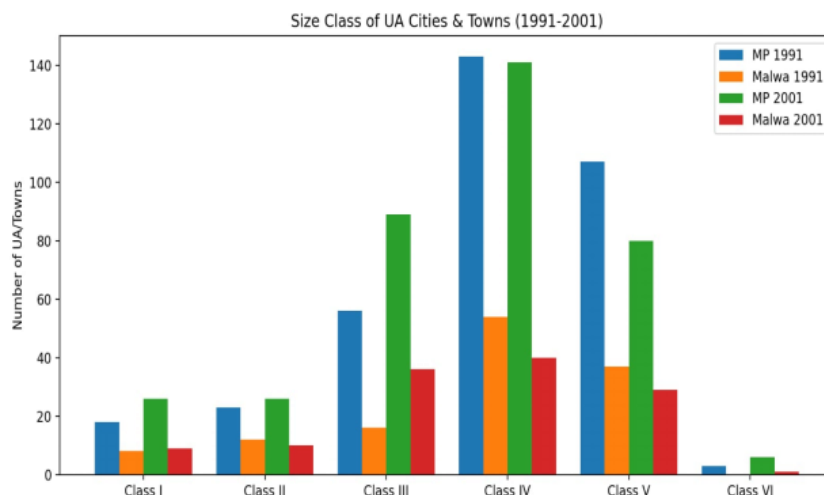
1991 के दशक की भाँति 2001 एवं 2011 में भी मध्य प्रदेश की तुलना में मालवा पठार प्रदेश में नगरीय जनसंख्या के दशकीय वृद्धि में वृद्धि देखी जा रही है। जिससे स्पष्ट होता है कि 1981 के दशक के बाद 1991, 2001 एवं 2011 में निरन्तर प्रदेश के औसत से मालवा पठार प्रदेश के नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि ज्यादा रही है। परन्तु यदि मालवा पठार प्रदेश के नगरीय जनसंख्या वृद्धि की तुलना 1981, 1991, 2001 एवं 2011 में करें तो यह निरन्तर ऋणात्मक वृद्धि ती तरफ अग्रसर हैं जो जागरूकता विकासात्मक भौगोलिक विकास का परिणाम है। मालवा पठार प्रदेश के दशकीय वृद्धि में 1971-1981 के मध्य दशकीय वृद्धि 49.48 थी जो 2001 से 2011 के मध्य 30.06 हो गयी है। अन्तरावलोकन का महत्व पूर्ण विषय है जो यह बताता है कि कैसे यह पठार क्षेत्र विकसित हुआ एवं शेष मध्य प्रदेश से विलग प्रदेश के रूप में स्थापित हुआ।

Table-03

Size class of UA's Cities & Town in M.P. & Malwa Plateau Region (1991-2001)

Size class of UA' s Cities & Town	1991		2001	
	Number of UAs/Towns		Number of UAs/Towns	
	Madhya Pradesh	Malwa Plateau Region	Madhya Pradesh	Malwa Plateau Region
Class-I	18	8	26	9
Class-II	23	12	26	10
Class-III	56	16	89	36
Class-IV	143	54	141	40
Class-V	107	37	80	29
Class-VI	3	-	6	1

Source - D.C.H.B. 1991 & 2001



नोट— मालवा प्रदेश के उक्त 1991 के आंकड़े में विदिशा एवं सागर के आंकड़े उपपलब्ध न होने के कारण उक्त जिलों के किसी भी वर्ग के नगरों को सम्मिलित नहीं किया गया है।

उपरोक्त तालिका— 03 अवलोकन से शोध के द्वितीय उद्देश्य के समझने एवं पूरा करने के लक्ष्य से यूनीफाइड एरिया एवं टाऊन को 6 वर्गों में विभाजित नगरों का म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश के संयुक्त आंकड़ों से तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है एवं यह तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि 1991 में मालवा से चतुर्थ श्रेणी में सर्वाधिक नगर 143 हैं और इसी श्रेणी में मालवा पठार प्रदेश में सर्वाधिक 54 नगर हैं जबकि 2001 में ऐसे नगरों की संख्या घटी है अर्थात् 2001 तक इनकी श्रेणी बदल गयी और यह पांचवी श्रेणी में चले गये 1991 में छठवी श्रेणी में मालवा में कोई नगर नहीं था पर 2001 में एक नगर हो गया इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि नगरीकरण की प्रवृत्ति में स्थिरता न हो कर तीव्र बदलाव की ओर यह क्षेत्र अग्रसर है। सम्पूर्ण तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट हो रहा है कि नगरीकरण का स्वरूप म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश दोनों में बदल रहा है जो विकासात्मक प्रवृत्ति का घोटक है।

भाग तीन : सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया एवं नगरीयता का प्रेरित होना—

प्रस्तुत शोध का तीसरा मुख्य उद्देश्य सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया है एवं वह निश्चित रूप से नगरीयता को प्रेरित करती है। प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश एवं मालवा पठार प्रदेश के 14 जिलों का अलग-अलग विश्लेषण किया गया तथा 14 जिलों के संयुक्त आंकड़ों को सारणीयन कर सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर तैयार करके विश्लेषण करने से पता चलता है कि ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि तो हो रही है परन्तु निरन्तर गिरावट की तरफ अग्रसर है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि को आव्रजन एवं प्रजनन दोनों प्रक्रियायें संचालित हो रही है जो नगरों से नगरों की ओर एवं ग्रामीण क्षेत्र से नगरों की तरफ चलायमान है। जिस कारण नगरीकरण की प्रवृत्ति धनात्मक रूप से संचालित है परन्तु यह निरावट की तरफ है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरों में प्राकृतिक वृद्धि बहुत कम है। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण प्राकृतिक वृद्धि ही है।

इस क्षेत्र में नगरीकरण की धनात्मक प्रवृत्ति का मुख्य कारण आव्रजन है जो शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित हुई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव—

उपरोक्त शोध पत्र लिखने के लिए मध्य प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के मालवा पठार प्रदेश के 14 जिलों के विभिन्न आंकड़ों का गहन विश्लेषण करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्पूर्ण मध्य प्रदेश की तुलना में मालवा पठार प्रदेश ज्यादा विकसित है। जो अन्य क्षेत्रों की जनसंख्या को आकर्षित करता है जिससे यहाँ नगरीकरण की प्रवृत्ति तीव्र है परन्तु 1981 से 2011 तक के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट हो रहा है कि नगरीकरण की प्रवृत्तियाँ अभी की धनात्मक विकास की ओर अग्रसर है परन्तु उनकी तीव्रता में गिरावट आ रही है। जो म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास का घोटक माना जा सकता है। अतः शोधार्थी के रूप में आशा करता हूँ कि यह शोध अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा है।

प्रस्तुत शोध में निकले निष्कर्षों के आधार पर हम यह सुझाव दे सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर ध्यान दे कर नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या के दबाव को कम किया जा सकता है जिससे नगरों में श्रम एरिया झुग्गी बस्ती के विकास को रोका जा सकता है साथ ही साथ नगरीय जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार सम्भव है तथा ग्रामीण क्षेत्रों को बेहतर जीवन यापन की सुविधा रोजगार, सुरक्षा, शिक्षा, भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण प्रदान कर नगरों की तरफ उनके पलायन को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ—

1. यादव धर्मेन्द्र प्रताप एवं जमाल उभरा (2015) “गोरखपुर महानगर में जनसंख्या वृद्धि एवं बुनियादी सुविधाओं का विकास” उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक— 45 (1) पृ0सं0 95—106 ।
2. कुमार, प्रमिला (2006) “मध्य प्रदेश : एक भौगोलिक अध्ययन” म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल पृ0सं0 160—227 ।
3. श्रीवास्तव प्रियंका (2011) “मालवा प्रदेश में औद्योगिक विकास” संविकास संदेश, गोरखपुर अंक—19 नं0 I & II पृ0सं0 75—78.
4. Goswami K.P. & Kumar Varun (2015) “Urbanization its Impact on Environment : A case study of Gorakhpur city U.P. “ Uttar Bharat Bhoogol patrika, the Association of north Indian Geographer’s Volume-45 No-01 June P.No. 1-10.
5. Guchhait Sanat Kumar & Gupta Abhik Das (2009) “Spatiality and Zoning of Urban Functions in the North Eastern part of Kalkata Metropolitan Area.” Transaction’s Institute of Indian Geographers Pune vol.31 no-02 p.no 121-136.
6. Kingsley Davis (1955) “The Origin and growth of Urbanization in the world”, A.J.S. 40, p-429.
7. Gideon, Sjoberg (1969) “The rise and Fall of cities : A Theoretical Perspective” Represented in the Cities in Newly Developing. Countries : Reading on Urbanism and Urbanization ed-by Gerald Breese, Prentice- Hall P- 230-238.
- 8- Lal . H. (1986) “Jansankhya Boogol” Basundhra Prakasan p-256.